DOI: 10.51220/hjssh.v2i1.7

Himalayan J. Soc. Sci. & Humanities, Vol 2 pp. 55-6, 2007

गढ़वाल की संस्कृति में प्रचलित धार्मिक मान्यताऐं एवं विश्वास

नीलम ध्यानी

हिन्दी विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय अगस्त्यमुनी, जिला रुद्रपयाग।

ABSTRACT

प्रस्तुत शोधपत्र गढ़वाल की संस्कृति में प्रचलित धार्मिक मान्यताओं - यथा - प्रकृति पूजा, देव पूजा, एवं पितृ पूजा का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करता है।

Key words :- Garhwali culture, Religious beliefs.

गढ़वाल हिमालय विशाल भू–खण्ड वाले भारत राष्ट्र का एक विभिन्न अंग है। मध्य हिमालय का गढ़वाल क्षेत्र नयनाभिराम सौन्दर्य, तीर्थस्थलों और धार्मिक परम्पराओं के साथ ही अपनी अदभुत सांस्कृतिक विरासत के लिए प्रसिद्ध रहा है। अगर हिमालय की व्यापकता की दृष्टि से देखें तो भारत देश की विशालता और इसका अस्तित्व जब–जब भी गौरवान्वित हुआ हैं तब–तब इस हिमालयी प्रदेश का इसमें अहम योगदान रहा है। विश्वप्रसिद्ध पर्वतारोही डॉ० डी.जी. लॉग स्टाफ ने एच० डब्लू टिल्सन की पुस्तक "द एसेन्ट आफ नन्दा देवी" में लिखा है कि " हिम प्रदेशों की छः यात्राऐं करने के पश्चात मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूँ कि एशिया के समस्त पर्वतीय प्रदेशों में गढ़वाल क्षेत्र सबसे सुन्दर है। न तो काराकोरम की बीहड़ प्राकृतिक छटा न ऐवरस्ट की एकाकी विशालता और नहीं हिमालय के दूसरे भू–भाग गढ़वाल से समानता कर सकते है। पर्वत श्रृंग व घाटियाँ, वन, मखमली घास के मैदान, पक्षी, जीव जन्तु, तितलियाँ और अनेकानेक फूलों की घाटियों की सम्मलित छटा एक ऐसे आनन्द की सृष्टि करती है, जो अन्य कहीं भी उपलब्ध नहीं है। ऐसी मान्यताऐं है कि गढ़वाल की पर्वत चोटियां देवी–देवताओं की सम्भावित निवास स्थली है। यह क्षेत्र आनादिकाल से अनेक तपस्वीयों, साधु, सन्तों, ऋषि मुनियों की तपस्थली के रुप में जाना जाता रहा है, जहां अनेक ग्रन्थों, काव्यों का सृजन हुआ, जिस कारण इस क्षेत्र में आज भी करोड़ों हिन्दुओं की आस्था व विश्वास पवित्र रूप में सुरक्षित है। पुराणों में हिमालय क्षेत्र को पांच खण्डों में बांटा गया है, जिसमें केदारखण्ड के नाम से जाना जाने वाला गढ़वाल क्षेत्र देवीय शक्ति से भरपूर, प्राकृतिक सम्पदा के भण्डारों से भरा हुआ, स्वयं में अदभुत है। पुराणों में केदारखण्ड को स्वर्ग भूमि कहा गया है।

© SHARAD

अन्यत्र पृथ्वी प्रोक्ता गंगा द्वारोत्तरां बिना,

इदमेव महाभागं स्वर्गद्वारं स्मृतं बुधैः[1]।।

यह वास्तव में सत्य ही प्रतीत होता है, क्योंकि कि यह क्षेत्र अमृत रस प्रभावित करती जीवन दायनी गंगा, पवित्र जल से भरपूर अनेक नदियों का उदगम स्थल भी है। हिमालय की उच्च धवल चोटियां, बदरीनाथ व केदारनाथ की महानता, पांच प्रयागों की पवित्रता, गंगोत्री, यमनोत्री सप्त कुण्ड व तप्तकुण्डों के महात्म्य से मंडित गढ़वाल क्षेत्र की संस्कृति का मूल स्रोत स्वाभाविक रुप से आध्यात्मक रहा है। इतिहास के अभिलेखों से पता चलता है कि यह क्षेत्र अनेक जातीय समुदायों का मिश्रण रहा है। जसका अपना भूगोल, इतिहास और पहचान है। भूगर्भशास्त्रियों द्वारा प्राप्त कुछ सांस्कृतिक अवशेषों से यहां की संस्कृति की जो पहचान हुई है उसके आधार पर कह सकते है कि यहां पृथक जनजाति के रुप में अपनी नैतिक व्यवस्था थी जिसके नीचे ऐसे अनेक समुदायों की भांति जटिल सामाजिक सरचनाऐं और संस्कृति मौजूद रही। किन्नर, करात, दस्य, आर्य, खस, नाग, कत्यूर एवं कुछ अन्य जातियेां से भी इस भू–भाग का सम्बन्ध रहा है[2]।

यहां अनेक जातियां व धर्मो का पदार्पण होने के बावजूद यहां की विषम भौगोलिकता के कारण जो भी नयी जाति व संस्कृति या धर्म यहां आये वे यहां की परम्परागत संस्कृति और धर्म में विलीन होते हुए इसी का अंग बन गये। छः जनपदों और ५० लाख से अधिक की आबादी वाला यह क्षेत्र अपने पैतृक प्रदेश (उ०प्र०) के उत्तरदिशा में स्थित है। उत्तर में तिब्बत, दक्षिण में बिजनौर जनपद, पश्चिम में अल्मोड़ा, पूर्व में हिमाचल प्रदेश स्थित है। यहां मूल रुप से ब्राह्मण छत्रिय, शूद्र, वैश्य, वर्ग का मिला जुला रुप देखने को मिलता है। समन्वय प्रधान सांस्कृतिक विरासत के बावजूद उभयनिष्ठ धर्मपरायण जनता का प्रतिनिधित्व यह क्षेत्र करता है।

जब हम यहां की प्रचलित धार्मिक मान्यताओं व परम्पराओं की बात करते है तो यहां के धर्म का स्वरुप लोगों में विख्यात सामान्य विश्वास, आध्यात्मिक विचारधारा और अनादिकाल से चली आ रही मान्यताओं पर आधारित है। विभिन्न प्रकार के तीज त्यौहार, मेले, व्रत, देवपूजा कार्य, उत्सव, कर्मकाण्ड में आम गढ़वाली मानस के धार्मिक मान्यताओं के दर्शन परिलक्षित होते है। धार्मिक (अनुष्ठानों में संसार की व्यापकता, आत्मा परमात्मा का सम्बन्ध, जीवन–मरण के यक्ष प्रश्नों का निवारण विद्यमान प्रतीत होता है। यहाँ का मानव यहाँ की प्रकृति के अनुरुप हृदय से सरल व सहज

है, हृदय की यही सरलता धर्म के प्रति आस्था व अनेकानेक परम्पराओं के पवित्र निर्वहन की प्ररेणा देती है। विषम भौगोलिक परिस्थितियां, पहाड़ों, घाटियों और घने जंगलों की बीरानगी का विराट एकाकी माहोल, समय–समय पर इस क्षेत्र की रौदंती प्राकृतिक आपदाओं के चलते यहाँ का मानव 'नियति' पर भी आश्रित हो गया, फिर भी भाग्यवादी विडम्बनाओं को झेलता यहाँ का आम जन कर्मवाद पर भी आस्था बनाये हुए है, और विपत्तियों तथा विषम परिस्थितियों का सामना शान्तिपूर्ण तरीके से करने के लिए प्रतिवद्ध जान पड़ता है, इसलिए यहां अनादि काल से प्रचलित धार्मिक मान्यताओं की जड़े काल चक्र बदलने के बावजूद और भी गहरी होती गयी, मुख्य रुप से यहां शैव व वैष्णव समुदाय का बोलबाला है। शैव समुदाय शिव की अराधना तथा वैष्णव समुदाय विष्णु की उपासना करता है। यहां प्रचलित प्रमाणित धार्मिक परम्पराओं एवं विश्वासों को मुख्यतः तीन श्रेणियों मे विभक्त किया जा सकता है।

प्रकृति पूजा- यहाँ का व्यक्ति पौराणिक काल से प्रचलित प्रकृति पूजा का आज भी निर्वहन कर रहा है।प्रातः उठकर स्नान ध्यान के उपरान्त तुलसी को पानी चढ़ाना, सूर्य, नमस्कार सूर्य व्रत, चन्द्र व्रत, पूर्णमासी, संकटचौथ पर चन्द्रमा की पूजा का प्रचलन आज भी अपनी सार्थकता बनाये हुए है। वनस्पतियों की पूजा का वर्णन पुराणों में भी मिलता हैं, आज भी गढ़वाल के घर–घर में आम, पीपल चीड़ केला, पदमवृक्ष, हल्दी, दूब, तुलसी की पूजा से धार्मिक भावनाओं के पोषण की परम्परा व्याप्त है। विवाह के उपरान्त नव वधू को घर के निकटस्थ जल प्रपात (धारे) की पूजा करवाना शादी संस्कार का अहम् हिस्सा माना जाता है। पशुओं में गाय की विशिष्ट अंदाज से पूजा ने इस क्षेत्र को देश के अन्य क्षेत्रों से अलग पहचान दिलायी है। शादी में कन्यादान के साथ ही 'गाय दान' की विशिष्ट रस्म गाय के प्रति यहाँ के लोगों के असीम विश्वास को दर्शाती है। बैल को शिव का वाहन माना जाता है। यही कारण है कि यहाँ उसे खूटें से बांधे रखना गलत माना जाता है।

देव पूजा- गढ़वाल से प्रचलित धार्मिक मान्यताओं का दूसरा रुप देव पूजा के रुप में सामने आता है। प्रत्येक सामाजिक कृत्य के पीछे यहां धार्मिक भाव के दर्शन होते है। मनुष्य को कष्ट पहुंचाने वाली तमाम शक्तियों की पूजा यहाँ विशिष्ट अन्दाज में की जाती है। देव पूजन की पद्धित भी दो रुपों में दृष्टव्य होती है। प्रथम रूप में विभिन्न देवताओं, देवियों जैसे शिव, विष्णु ब्रह्म, गणेश, हनुमान व शक्ति की द्योतक दुर्गा, जगदम्बा की पूजा शिवालयों व मंदिरों में जाकर पानी, दूध, नैवद्य, धूप, दीप,अर्पित करते हुए मन्त्रों व वृतों के साथ सम्पन्न की जाती है। दूसरा रुप व्यक्ति आरोपित

देवता हैं वह प्रश्नकर्ता का जबाव देता है। देवी देवताओं को खुश न करने पर दोष उत्पन्न होना माना जाता है। यह विश्वास गढ़वाल के आम जन का होता है। गढ़वाल क्षेत्र मे मंत्र साहित्य का भी अपना महत्व है।गढ़वाल के मंत्र साहित्य में गुरू गौरखनाथ का बड़ा प्रधान्य रहा है। मालूम पड़ता हैं यहां कभी नाथों का प्रभाव था, ओले, अतिवृष्टि के निवारण के लिये जिन डालियों को (डडवार) "वार्षिक वृत्ति" प्रत्येक घर से मिलती है, वह नाथ सम्प्रदाय ही है। दक्षिण गढ़वाल में बहुत नाथ रहते है। उत्तराखण्ड में गौरख पंन्थियों का सबसें बड़ा स्थान देवलगढ़ में सत्यनाथ का मन्दिर है[3]।

इसी प्रकार सेंम मुखेम के लोगों का जिन्हें फेकवाल कहा जाता है, दान मांगने हेतु जाना अनिवार्य समझा जाता है, चाहे वह कितना भी सभ्रान्त क्यों न हों यह भी यहां की प्रचलित विश्वास व परंपरा का ही द्योतक है। इसके अतिरिक्त स्थानीय देवताओं नागराज, क्षेत्रपाल, और पाण्डव, यक्ष, परी (अंछरिया) की पूजा का प्रचलन भी गढ़ क्षेत्र में सर्वत्र व्याप्त है।

पितृ पूजा- धार्मिक मान्यताओं का तीसरा व सबसे जीवंत पहलू पितृ पूजा के रुप में इस क्षेत्र में देखने को मिलता है। अपने पितृों के प्रति सम्मान की यह परम्परा शारदिय नवरात्र से पहले अश्विन कृष्ण पक्ष में होती है।यह पक्ष 'पितृ पक्ष' के रुप में मनाया जाता है प्रत्येक बुजर्ग आत्मा को सम्मान के साथ याद किया जाता है। प्रत्येक पूर्वज की पूण्य तिथि पितृ--पक्ष में निश्चित तिथि को तर्पण अर्पण किया जाता है, तथा ब्राह्मणों को भोज व दान की परम्परा के साथ श्रद्धान्जलि अर्पित की जाती है।अपने पितृ के याद करते हुए सर्वप्रथम" पितृथाली" के रुप में सभी बने खाद्य पदार्थों का भोग उन्हें चढ़ाया जाता है। तथा "गाय" या कौवें के रुप में उन्हें खिलाया जाता है। गढ़वाल क्षेत्र में यह मान्यता भी है, कि यदि किसी व्यक्ति की अकाल मृत्यु हो जाय तो उसकी आत्मा को शांति नहीं मिलती, और उसकी आत्मा के लिए विभिन्न रुपों में शान्ति पाठ, किये जाने का प्रचलन भी देखने को मिलता है। पूर्व जन्मों के कर्मों व उनके फलों का महत्व भी यहाँ व्यापक रुप से आम आदमी में काफी गहरे तक व्यापक है। इसके अतिरिक्त प्रचलित आम विश्वासों में ब्राह्मण, भिखारी को बिना दक्षिणा घर से विदा न करना, नामकरण मुण्डन विवाह जनेव व अन्तिम संस्कार को विधि विधान से सम्पन्न करना, प्रत्येक शुभ कार्य को दिन, वार व नक्षत्र के अनुसार सम्पन्न करना, ग्रह, राशि दशा का समय--समय का पूजन, दान किया जाना प्रमुख है। शुभ कार्य पर जाते हुए भरा बर्तन दिखना या हरा घास ले जाती स्त्रियां, छीक आना, कांच टूटना, सांप व बिल्ली का रास्ता काटना, रात में सिचार या उल्लू का रोना अशुभ संकेत माने जाने का विश्वास यहाँ प्रबलतम रूप में दिखायी देता

है। शरीर का अंग फड़कना या स्वप्न के दृष्यों को अच्छे बुरे से जोड़ना भी यहां की अन्य प्रचलित मान्यतायें है।

आज के विकासशील युग में गढ़वाल हिमालय के बहुत से भू–भाग शहरों में बदल गये है। स्वाभाविक रुप से विकास की इस दौड़ में सभ्यता का भी विकास हुआ है, फलस्वरुप यहां के ज्यादातर ग्रामीण इलाकों में फैली हुई। सभ्यता का त्वरित विकास हुआ तथा लोगों की रुचि शिक्षा व सभ्रान्तता के प्रति जागृत हुई इस दौर में यहां व्याप्त धार्मिक भावनायें व विश्वास और अधिकतर मजबूत होते गये यहां का धनाढ्य, उच्च्य शिक्षित वर्ग, अप्रवासी, संभ्रान्त वर्ग, इन धार्मिक परम्पराओं के आगे नतमस्तक होता प्रतीत होता है। फिर भी किसी क्षेत्र की संस्कृति में गुण दोष हर काल में विद्यमान रहें हैं। यहां भी प्रचलित विश्वासों में भूतप्रेत विश्वास और बली प्रथा जैसी अनेक परम्पराए ऐसे पक्ष है, जिनका विरोध होना ही चाहिए। आज के वैज्ञानिक दौर में नये रुप में समझने की आवश्यकता है। आज आवश्यकता इस बात की है कि इस क्षेत्र में फैली धार्मिक भावों की गंगा को पुष्पित व पल्लवित किया जाय। भले ही जल प्रपातों, नदियों, वृक्षों, या पशुओं की पूजा का कोई वैज्ञानिक आधार न हों परन्तु एक छुपा हुआ पर्यावरणीय संरक्षण का संदेश तो देता ही है। इसी प्रकार विवाह संस्कार का मजबूत बन्धन आज की पीढ़ी में तेजी से प्रचलित हो रहे प्रेम विवाह व न्यायालयी विवाह को हतोत्साहित करने में सक्षम तो है ही। हमारी धार्मिक मान्यताएँ आज की धर्म के प्रति दिग भ्रमित पीढ़ी को संस्कारित होने का संदेश देने में सक्षम है। इसलिए गढ़वाल क्षेत्र की इन प्रचलित धार्मिक मान्यताओं व विश्वासों को रूढ़ीवादिता की तरफ अग्रसर होने का प्रयास न कहते हुए सामाजिक चेतना का प्रतीक कहा जाना उचित होगा, यह आवश्यक इस लिए भी है क्योंकि आज की पीढ़ी पश्चात्य संस्कृति के मन भावन प्रवाह में बह कर अपनी वास्तविकता को खंडित करती प्रतीत हो रही हैं।

सन्दर्भ :-

१. स्कन्दपुरण।

२. डॉ० गोविन्द चातक, भारतीय संकृति का सम्बन्ध, मध्यहिमालय। पृष्ठ संख्या १८ से २०।

३. डॉ० गोविन्द चातक – डॉ० पीताम्बर बड़थ्वाल के श्रेष्ठ निबन्ध। पृष्ठ संख्या– ८८